ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

# उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की अधिगम शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन

**रेहाना उस्मानी**
शोधार्थी : शिक्षा संकाय, जैन विश्वभारतीय विश्वविद्यालय, लाडनूं, नागौर(राज.)

**डॉ. गिरिराज भोजक**
शोध निर्देशक : सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय, जैन विश्वभारतीय विश्वविद्यालय, लाडनूं, नागौर(राज.)

## सारांश :

अधिगम शैली वह मार्ग है जिसके द्वारा व्यक्ति अपना ध्यान विषय पर केंद्रित करता है तथा नये कौशलों को अपने मस्तिष्क में संग्रहित कर लेता है। ये वे साधन है जो व्यक्ति के जीवन शैली को पूर्ण करते है।

अधिगम के दौरान व्यक्ति या विद्यार्थी जो तरीके अपनाता है वह सबके भिन्न–भिन्न होते हैं, वही उनकी अधिगम शैली होती है या साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि व्यक्ति के सीखने के विभिन्न तरीकों को अधिगम शैली कहा जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अधिगम या सीखने की प्रक्रिया बराबर चलती रहती है। जिस प्रकार व्यक्ति को विभिन्न कार्यों के लिए विभिन्न क्षमताएं प्रकृति प्रदत्त होती हैं, ठीक उसी प्रकार अधिगम की भी क्षमता मनुष्य को प्राप्त होती है। भिन्न–भिन्न व्यक्तियों में अधिगम की विभिन्न क्षमताएं होती हैं। विद्यार्थियों की लैंगिक प्रस्थिति और उनके क्षेत्र की पृष्ठभूमि का अधिगम शैली से सार्थक संबंध का अध्ययन करना शोध का प्रमुख उद्देश्य है। शोध में छह अधिगम शैली है, इन्हीं के आधार पर विद्यार्थियों पर इसका अध्ययन किया गया है।

**मुख्य शब्द** : अधिगम शैली, उच्च प्राथमिक, विद्यार्थी।

## प्रस्तावना :

अधिगम शैली सामान्यतः भिन्न उपागम या अधिगम के भिन्न तरीके हैं। अधिगम के प्रति यह उपागम इस तथ्य पर बल देता है कि अधिगमकर्ता बहुत ही भिन्न तरीके से सूचनाओं के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं और उन्हें अनुभव भी करते हैं। अधिगम शैलियों के सिद्धांत यह दर्शाते हैं कि कितने अधिक अधिगमकर्ता जो सीखते हैं वह शैक्षिक अनुभवों के साथ सीखे गये अनुभवों का कितना अधिक उपयोग करते हैं जिससे उनकी विशेष अधिगम शैली विकसित होती है, चाहे वह इसमें कुशल हो या न हो। वास्तव में शिक्षा शास्त्री को यह प्रश्न कभी भी नहीं करना चाहिए कि क्या यह विद्यार्थी चुस्त (स्मार्ट) है बल्कि इसकी अपेक्षा यह प्रश्न करना चाहिए कि यह विद्यार्थी अपनी अधिगम शैली के प्रयोग में कहा तक स्मार्ट है?

अधिगम शैली वैयक्तिक विभिन्नता को जानने के अनेक उपकरणों में एक प्रकार का उपकरण है जिससे यह जाना जा सकता है कि विद्यार्थी अधिगम की प्रक्रिया में किस प्रभावी तरीके को अपने अनुभवों के लिए माध्यम बनाता है।

अधिगम शैली व्यक्ति का वह गुण है जो अनुदेशनात्मक परिस्थितियों के साथ इस तरह अन्तःक्रिया करता है कि इन परिस्थितियों में परिवर्तन के परिणामस्वरूप विभिन्न अधिगम उपलब्धि प्राप्त होती है।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

बालकों में अधिगम की एक शैली होती है जो उनकी परिस्थितियों के अनुरूप होती है तथा जिनका वह स्वाभाविक रूप से उपयोग करते हैं, जब तक कि हम उन्हें अन्य तरीके से प्रशिक्षित न कर दें।

प्रत्येक छात्र की सहायता करने के लिए और उनके स्वाभाविक रूझान को समझने का लाभ उठाने के लिए हमें केवल उनकी अधिगम शैली का ही पता नहीं लगाना चाहिए बल्कि इसे स्वीकार भी करना चाहिए।

अधिकांश लोग अपनी शैलियों के प्रयोग में कुछ लचीले होते हैं और परिस्थितियों के अनुसार अपनी शैलीपूर्ण तरीके में परिवर्तन करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि भिन्न प्रकार के कार्यों की सम्पूर्णता में मस्तिष्क एक लचकदार भूमिका निभाता है। इसी कारण यह माता–पिता और अध्यापकों के लिए विद्यार्थियों की मस्तिष्क की प्रकृति को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

व्यक्तिगत विभिन्नता व्यक्ति की अधिगम शैली एवं सोच को भी प्रभावित करती है। माता–पिता एवं अध्यापक बच्चों को और उनकी स्वाभाविक प्रवृत्तियों को अनुभव करने में समर्थ होते हैं और यह स्वाभाविक प्रवृत्तियॉ उनके सोचने, कार्य करने व भिन्न–भिन्न तरीके से विभिन्न परिस्थितियों में सीखने से संबंधित होती है।

शैलियॉ योग्यताओं की अपेक्षाकृत प्रवृत्तियॉ अधिक होती है, ये बुद्धि से निर्देशित करने के तरीके होते हैं, जिसका उपयोग कर व्यक्ति आरामदायी महसूस करता है।

विद्यार्थियों को विषय–वस्तु से जोड़ने के पूर्व उनकी पसंदीदा सोच एवं शैलियों पर उनके अवधान पर प्रकाश डालना अध्यापक के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। अगर वह ऐसा करने में असफल रहते हैं तो इसके परिणाम गंभीर होते हैं क्योंकि अध्यापक विद्यार्थियों के मस्तिष्क की उलझन भरी शैलियों को विकसित कर सकते हैं। चूंकि शिक्षकों द्वारा शिक्षण की जिस पद्धति को अपनाया गया प्रायः उनके व्यक्तिगत चिन्तन शैली को प्रतिबिम्बित करती है। वे विद्यार्थी जो अध्यापकों की इसी चिन्तन शैली को धारण किए हुए हैं लाभान्वित होते हैं, पुरस्कृत होते हैं। अन्यथा वे विद्यार्थी जिनकी शैलियॉ भिन्न है वह अध्यापकों की शैलियों को समझ नहीं सकते हैं, जैसे–मंद अधिगमकर्ता, मंद बुद्धि विद्यार्थी, मूर्ख इत्यादि।

शैलियॉ योग्यताओं की तरह जन्मजात नहीं होती है। इनका अधिकांश रूप पर्यावरणीय स्थिति, माता–पिता और अध्यापकों द्वारा बच्चों को पालन करने से सम्बन्धित होता है। किसी व्यक्ति की एक विशेष अवस्था पर उसकी पसंदीदा शैली हो सकती है और वही शैली अन्य व्यक्ति की दूसरी अवस्था में दिखाई दे सकती है। शैलियॉ निश्चित नहीं होती बल्कि परिवर्तनशील होती है। हमें हमारी स्वयं की, विद्यार्थियों की पसंद की शैलियों को पहचानने की आवश्यकता है।

अधिगम शैली इस विस्तार का समर्थन करती है कि प्रत्येक छात्र असाधारण, अद्वितीय है तथा उसे उस तरीके से सिखाया जाना चाहिए जिसमें वह सर्वोत्तम सीखे। अधिगम शैली को विशेषतः किसी विशेष अधिगम क्षेत्र में एक व्यक्ति के अर्जित व्यवहार के विशिष्ट प्रतिरूप के रूप में मानना चाहिए। इस प्रकार अधिगम शैली में वैयक्तिक विभिन्नता उन उपागमों के प्रकार का मुख्य निर्धारक है जो विभिन्न छात्रों को यह बताने में अच्छी तरह समर्थ है कि वे विभिन्न तरीकों से कैसे सीखते हैं।

अधिगम शैली के निदान में वैयक्तिक अनुदेशन के लिए तार्किक आधार पर नवीन द्वार खोल दिए है। इसने शिक्षकों के लिए विद्यालय में छात्रों को प्रेरित करने, उन्हें समझने तथा सहायता

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

पहुँचाने के लिए अधिक प्रभावी संसाधन उपलब्ध कराएँ है, जो शिक्षा में एक वास्तविक आधुनिक उपागम का आधार है।

विद्यार्थियों में प्रभावशाली अधिगम के लिए उन्हें शैक्षिक संवेदनापरक समूह में समूहबद्ध करने और व्यक्तिगत अधिगम शैली के निदान करने की आवश्यकता है। इस कार्य में शिक्षक उनकी प्रभावी ढंग से मदद करें।

**कुरे** का मत है कि बालक की जटिल परन्तु मौलिक या विशिष्ट अधिगम शैली से कई तत्व या कारक निर्धारित होते हैं। शिक्षक छात्रों की अधिगम शैली को जानकर उस जानकारी का उपयोग छात्रों के समूह में बॉटने, उपयुक्त शिक्षण विधियों का चयन करने तथा छात्रों के उपलब्धि स्तर में वृद्धि करने के लिए प्रयुक्त कर सकता है। शोधकार्य बताते हैं कि अधिगम शैली का अध्ययन एवं उपयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के तात्कालिक एवं दीर्घकालिक परिणामों को समृद्ध करने में पूर्णतः सहायक हुआ है।

## अधिगम शैली की परिभाषाए :

**सीगल** और **कूप** के मतानुसार ''अधिगम शैली व्यक्तियों के बीच में उनके ज्ञानात्मक सबंध को जोड़ने के लिए एक पुल का कार्य करती है।''

**जॉन. पी. डिसेस्को** का कथन है कि ''अधिगम शैली नवीन सम्प्रत्यय एवं सिद्धांतो के अधिगम के पाठ्यक्रम में अपनायी गयी व्यक्ति की एक अपनी व्यक्तिगत प्रक्रिया है।'' अर्थात इसमें भी व्यक्तिगत विभिन्नताएँ है और सभी अपने अनुसार की अधिगम शैली से सीखते हैं।

## अधिगम शैली के प्रकार :

शिक्षाशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों ने अधिगम शैली को दृष्टिगत किया है। इस शोध अध्ययन में जिन अधिगम शैलियों का अध्ययन किया जा रहा है वे निम्नलिखित है –

1. **सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली** – सक्रिय शिक्षण 'सीखने' का एक तरीका है जिसमें छात्र सक्रिय रूप से या अनुभवात्मक रूप से सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते है और सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम में छात्र की भागीदारी के आधार पर सक्रिया सीखने के विभिन्न स्तर होते हैं।
2. **सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली** – सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली में खेल के मध्यमान से सीखना, गतिविधि आधारित शिक्षा, प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा, समूह कार्य, परियोजना पद्धति आदि सम्मिलित है। सक्रिय रचनात्मक अधिगम निष्क्रिय अधिगम के विपरीत है। यह शिक्षार्थी–केन्द्रित है। सक्रिय रचनात्मकता में सक्रिय सीखने में प्रत्येक विद्यार्थी की सक्रिय भागीदारी एक आवश्यक पहलू है।
3. **चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली** – चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली सीखने के सबसे आम लक्ष्यों में से एक दृश्य सीखने की शैली है। कुछ छात्र चार्ट, आरेख, रेखाचित्र आदि के मध्यमान से वस्तु का दृश्य देखते है जो विस्तृत उदाहरणों के साथ विषयों को चित्रित करते है और उन्हें बेहतर तरीके से समझने में सहायता करते है।
4. **चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली** – चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली में विद्यार्थी चित्रों के मध्यमान से देखकर सीखते हैं और इससे उनकी कल्पनाशक्ति विकसित होती है।
5. **मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली** – मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली वाले विद्यार्थी ध्वनि और श्रवण के मध्यमान से सीखते हैं। मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली सीखने को श्रव्य और दृश्य से जोड़ती है जिससे विद्यार्थियों को सीखने में सरलता होती है।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

6. **मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली** – मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली वाले विद्यार्थी ऐसी गतिविधियों से आनन्द प्राप्त करते है जिसमें सुनना सम्मिलित होता है, जैसे ऑडियोबुक, पॉडकास्ट या मौखिक कहानी।

## शोध औचित्य :

विद्यार्थियों की अधिगम शैली पर कई शोध कार्य हुए है। व्यक्तिगत कारक लोगों की अधिगम शैली में योगदान करते हैं और कई शोधों का केंद्र बिंदु रहे हैं (होसेनी, 2019, सुह और चो, 2018, सादेत और सादेघी, 2005, याजिसी, 2017)। अधिकांश दृष्टिकोणों में व्यक्तिगत कारकों को लोगों की अधिगम शैली का अभिन्न अंग माना जाता है और शोधकर्ताओं द्वारा इस पर जोर दिया गया है। अधिगम शैली में प्रभावी सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तिगत स्तर के चर में से, लोगों की क्षमता, व्यक्तित्व विशेषताएं, अनुभूति शैली, बुद्धिमत्ता और चुनौतीपूर्ण व्यक्तित्व का उल्लेख किया जा सकता है। निरंतरता में, सीखने की शैलियों और रचनात्मकता के क्षेत्र में किए गए शोध के कई उदाहरण बताए गए हैं। एचएसयू (1999) ने डायवर्जर्स को सभी प्रकार के शिक्षार्थियों में सबसे अधिक कल्पनाशील बताया। ओश्हारा और स्टर्नबर्ग (2001) द्वारा किए गए शोध में 110 छात्रों के अधिगम शैली के उनके प्रदर्शन पर प्रभाव की रिपोर्ट दी गई है ताकि यह साबित हो सके कि अधिगम शैली का प्रभाव छात्रों के व्यक्तित्व और अनुभूति पर निर्भर है। पाशा (2008) ने छात्रों में रचनात्मकता को बढ़ाने पर अधिगम शैली को बढ़ावा देने के तीन तरीकों के प्रभाव का अध्ययन और तुलना की। नतीजे बताते हैं कि शिक्षण पद्धति की परवाह किए बिना, रचनात्मकता शिक्षण ने छात्रों में रचनात्मकता के विकास और बढ़ावा देते में मदद की। भट्ट(2019) दर्शाता है कि हाई स्कूल के छात्रों की सीखने की शैली और समस्या समाधान के बीच एक सार्थक सम्बन्ध है। जिन 559 छात्रों पर परीक्षण किया गया, उनमें से सीखने की शैली को आत्मसात करने और अलग करने वाले छात्रों में बेहतर तर्क और समस्या सुलझाने की क्षमता थी। ईशानी एट.अल. (2014)ने सीखने की शैलियों और रचनात्मकता के बीच सम्बन्ध की जांच की। अध्ययन नमूने में 354 छात्र (164 लड़के और 190 लड़कियां) शामिल थे। निष्कर्षों से अधिगम शैली और व्यक्तिगत कारकों के बीच एक महत्वपूण्र संबंध का पता चला। गर्ग (2015) ने जबलपुर भारत के 600 हाई स्कूल छात्रों में व्यक्तिगत कारकों पर सीखने और सोचने की शैलियों के प्रभाव का अध्ययन किया। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि सीखने और सोचने की शैलियों का व्यक्तिगत कारकों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर अभी तक इस समस्या से संबंधित ना के बराबर शोध कार्य हुए है अतः यही कारण रहा कि शोधार्थी ने उच्च प्राथमिक स्तर पर इस समस्या का अध्ययन करने का विचार किया क्योंकि वर्तमान में उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शिक्षण पद्धति में काफी परिवर्तन हो रहे है। इन परिवर्तनों के कारण विद्यार्थियों की स्मरण रखने की क्षमता, लिखने की क्षमता आदि प्रभावित हो रहे है क्योंकि बच्चों के व्यक्तिगत कारकों जैसे उनकी लैंगिक प्रस्थिति और क्षेत्र की पृष्ठभूमि को सम्मिलित नहीं किया जा रहा है। ऐसे में यह देखना आवश्यक है कि क्या विद्यार्थियों के लिंग और पृष्ठभूमि का उनकी अधिगम शैली से सार्थक संबंध है अथवा नहीं। जिससे उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली के आधार पर उनकी शिक्षण विधियों में परिवर्तन किया जा सके। अतः शोधार्थी ने विचार किया कि इस समस्या पर अध्ययन किया जाए।

## अध्ययन के उद्देश्य :

(1) उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली का अध्ययन करना।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

(2) उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण छात्रों का अधिगम शैली का अध्ययन करना।
(3) उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की अधिगम शैली का अध्ययन करना।
(4) उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का अध्ययन करना।
(5) उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का अध्ययन करना।

## परिकल्पनाएँ :

1. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों का अधिगम शैली में सार्थक अन्तर होता है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण छात्रों का अधिगम शैली में सार्थक अन्तर होता है।
3. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की अधिगम शैली में सार्थक अन्तर होता है।
4. उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में सार्थक अन्तर होता है।
5. उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली में सार्थक अन्तर होता है।

## तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण :

1. **उच्च प्राथमिक विद्यालय स्तर** – औपचारिक शिक्षा की प्राप्ति हेतु गठित विद्यालय, जहां कक्षा 6 से 8वीं तक के विद्यार्थियों को अध्ययन करवाया जाता है, उन्हें उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालय कहा जाता हैं।
2. **अधिगम शैली** – अधिगम शैली वह मार्ग है जिसके द्वारा व्यक्ति अपना ध्यान विषय पर केंद्रित करता है तथा नये और कठिन प्रश्नों एवं कौशलों को अपने मस्तिष्क में संग्रहित कर लेता है वे न तो भौतिक साधन है, न विधियाँ हैं और न ही कौशल है जिनका कि व्यक्ति सीखने में प्रयोग करता है ये तो केवल वे साधन है जो व्यक्ति की शैली को पूर्ण करते है।

## चर

स्वतंत्र चर – ऑन लाइन शिक्षण प्रक्रिया ।
आश्रित चर – अधिगम शैली।

## शोध का परिसीमन :

प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

प्रस्तुत शोध कार्य अधिगम शैली तक ही सीमित है।

## शोध विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

## जनसंख्या :

प्रस्तुत शोध में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के उच्च प्राथमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

## न्यादर्श :

शोधकार्य में यादृच्छिक विधि द्वारा 60 विद्यार्थियों का चयन निम्न प्रकार किया गया है–

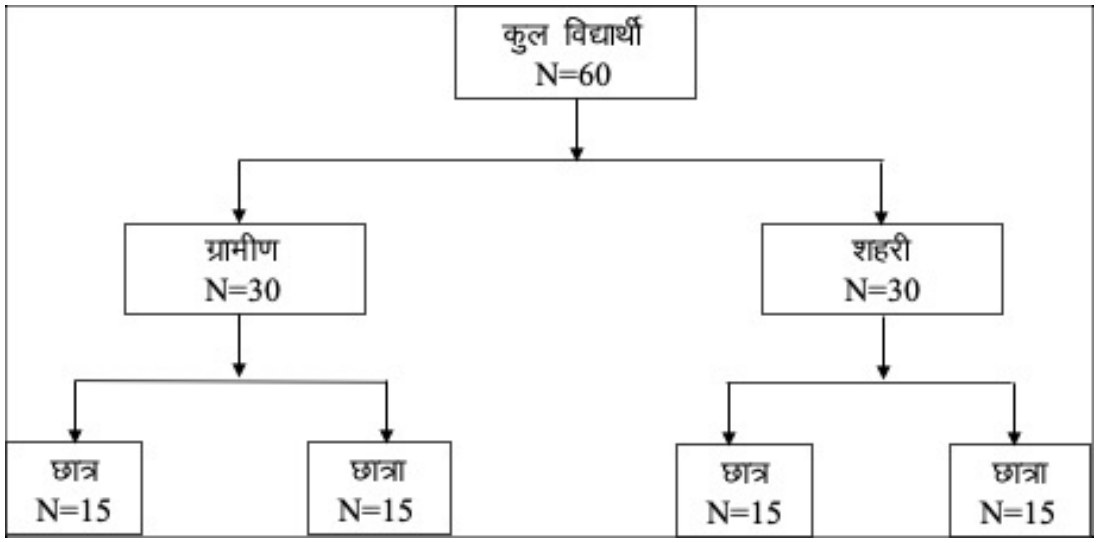


## शोध के उपकरण :

अधिगम शैली मापनी–शोध में करूणा शंकर मिश्रा द्वारा निर्मित अधिगम शैली मापनी का उपयोग किया गया है।

## शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में परिणाम जानने हेतु निम्न सांख्यिकी विधियों का उपयोग किया गया है–

1 मध्यमान
2. मानक विचलन
3 टी परीक्षण

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

सारणी संख्या 1

उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली का अध्ययन

| क्र. सं. | अधिगम शैली | विद्यार्थियों का प्रकार | संख्या (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (SD) | टी–मान (t-value) | सार्थकता स्तर (0.05 एवं 0.01) Significant/ Not Significant (S/NS) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली | ग्रामीण | 30 | 15.16 | 6.17 | 3.77 | सार्थक है |
| | | शहरी | 30 | 10.46 | 2.92 | | |
| 2. | सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली | ग्रामीण | 30 | 10.23 | 3.39 | 3.09 | सार्थक है |
| | | शहरी | 30 | 13.30 | 4.24 | | |
| 3. | चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली | ग्रामीण | 30 | 12.13 | 4.87 | 2.62 | सार्थक है |
| | | शहरी | 30 | 15.66 | 5.52 | | |
| 4. | चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली | ग्रामीण | 30 | 18.66 | 6.25 | 4.65 | सार्थक है |
| | | शहरी | 30 | 27.00 | 3.02 | | |
| 5. | मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली | ग्रामीण | 30 | 22.20 | 6.24 | 4.06 | सार्थक है |
| | | शहरी | 30 | 27.90 | 4.49 | | |
| 6. | मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली | ग्रामीण | 30 | 18.90 | 4.22 | 0.10 | सार्थक नहीं है |
| | | शहरी | 30 | 18.80 | 3.26 | | |
| | कुल अधिगम शैली | ग्रामीण | 30 | 95.80 | 9.46 | 3.09 | सार्थक है |
| | | शहरी | 30 | 103.30 | 9.30 | | |

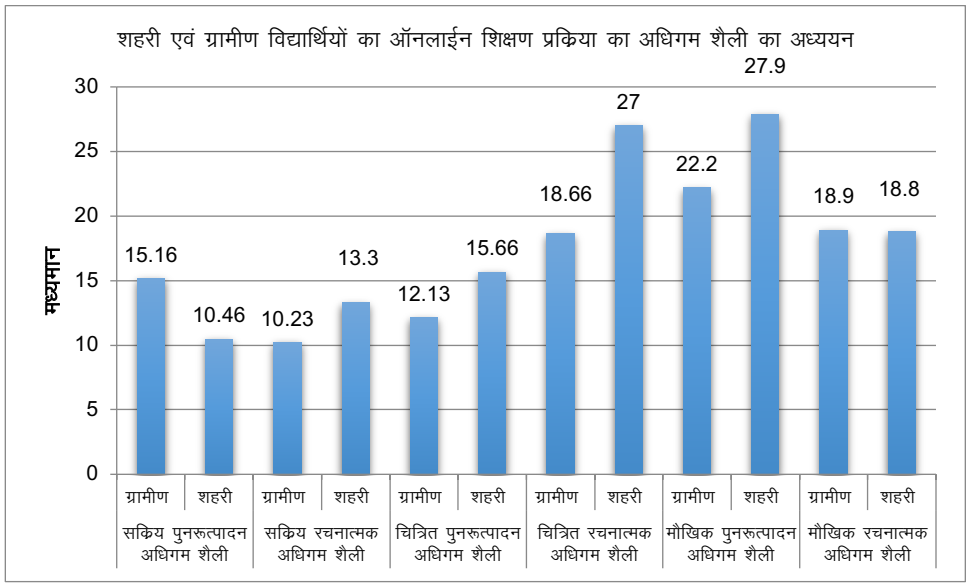


व्याख्या :

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 15.16 और 10.46 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

समूहों के विद्यार्थियों के सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 3. 77 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 10.23 और 13.30 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के विद्यार्थियों की सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 3. 09 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 12.13 और 15.66 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के विद्यार्थियों की चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 2. 62 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 18.66 और 27.00 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के विद्यार्थियों की चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 4.65 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 22.20 और 27.90 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के विद्यार्थियों की मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 4.06 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 18.90 और 18.80 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के विद्यार्थियों की मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 0.10 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 95.80 और 103.30 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के विद्यार्थियों की अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 3.09 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

अतः स्पष्ट है कि परिकल्पना ''शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली के घटकों में सार्थक अन्तर पाया गया।'' सत्य सिद्ध होती है।

सारणी संख्या 2

उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण छात्रों का अधिगम शैली का अध्ययन

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

| क्र. सं. | अधिगम शैली | छात्र | संख्या (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (SD) | टी–मान (t-value) | सार्थकता स्तर (0.05 एवं 0.01) Significant/ Not Significant(S/ NS) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 15.40 | 7.47 | 2.07 | सार्थक है |
| | | शहरी | 15 | 11.00 | 3.40 | | |
| 2. | सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 8.46 | 2.77 | 6.49 | सार्थक है |
| | | शहरी | 15 | 15.80 | 3.40 | | |
| 3. | चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 9.86 | 3.93 | 2.05 | सार्थक है |
| | | शहरी | 15 | 13.20 | 5.01 | | |
| 4. | चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 18.60 | 7.04 | 0.58 | सार्थक नहीं है |
| | | शहरी | 15 | 17.33 | 4.71 | | |
| 5. | मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 18.66 | 6.25 | 4.65 | सार्थक है |
| | | शहरी | 15 | 27.00 | 3.02 | | |
| 6. | मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 19.46 | 4.61 | 1.13 | सार्थक नहीं है |
| | | शहरी | 15 | 17.86 | 2.97 | | |
| | कुल अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 90.46 | 8.60 | 3.10 | सार्थक है |
| | | शहरी | 15 | 102.20 | 11.86 | | |

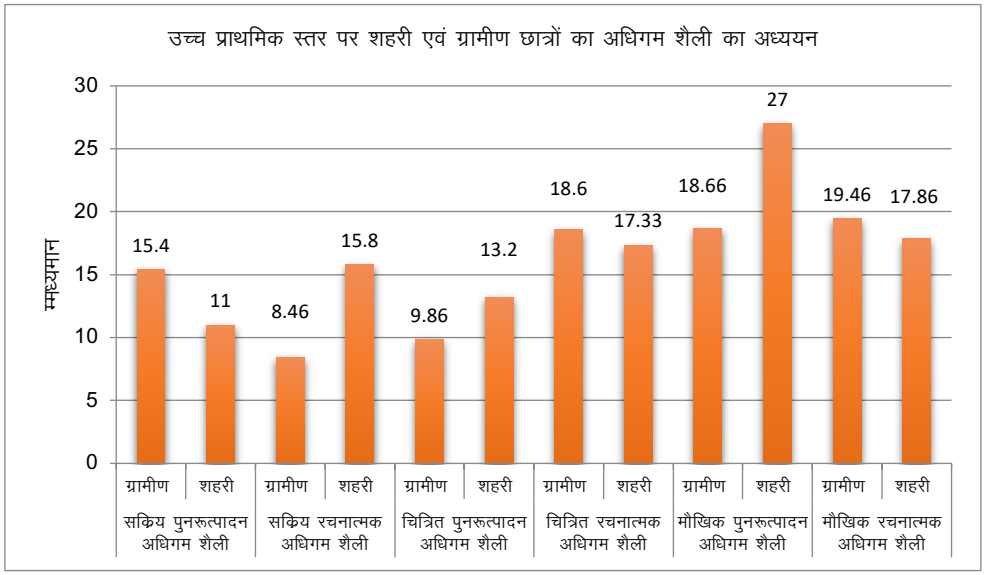


व्याख्या :

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्रों का मध्यमान क्रमशः 15.40 और 11.00 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्रों सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 2.07 है जो .01

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

और के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्रों में सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्रों का मध्यमान क्रमशः 8.46 और 15.80 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्रों की सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 6.48 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्रों में सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्रों का मध्यमान क्रमशः 9.86 और 13.20 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्रों की चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 2.05 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्रों में चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्रों का मध्यमान क्रमशः 18.60 और 17.33 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्रों की चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 0.58 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्रों में चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्रों का मध्यमान क्रमशः 18.66 और 27.00 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्रों की मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 4.65 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्रों में मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्रों का मध्यमान क्रमशः 19.46 और 17.86 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्रों की मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 1.13 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्रों में मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्रों का मध्यमान क्रमशः 90.46 और 102.20 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्रों की अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 3.10 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्रों में अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

अतः स्पष्ट है कि परिकल्पना ''शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की अधिगम शैली के घटकों में सार्थक अन्तर पाया गया।'' सत्य सिद्ध होती है।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

सारणी संख्या 3

उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की अधिगम शैली का अध्ययन

| क्र. सं. | अधिगम शैली | छात्रा | संख्या (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (SD) | टी–मान (t-value) | सार्थकता स्तर (0.05 एवं 0.01) Significant/ Not Significant(S/NS) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 14.93 | 4.80 | 3.62 | सार्थक है |
| | | शहरी | 15 | 9.93 | 2.34 | | |
| 2. | सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 12.00 | 3.07 | 0.99 | सार्थक नही है |
| | | शहरी | 15 | 10.80 | 3.50 | | |
| 3. | चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 14.40 | 4.85 | 2.07 | सार्थक है |
| | | शहरी | 15 | 18.13 | 4.99 | | |
| 4. | चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 15.73 | 3.36 | 1.11 | सार्थक नहीं है |
| | | शहरी | 15 | 17.00 | 2.85 | | |
| 5. | मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 25.73 | 3.36 | 1.75 | सार्थक है |
| | | शहरी | 15 | 28.80 | 5.57 | | |
| 6. | मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 18.33 | 3.56 | 1.05 | सार्थक है |
| | | शहरी | 15 | 19.73 | 3.36 | | |
| | कुल अधिगम शैली | ग्रामीण | 15 | 101.13 | 7.11 | 1.36 | सार्थक है |
| | | शहरी | 15 | 104.40 | 5.99 | | |

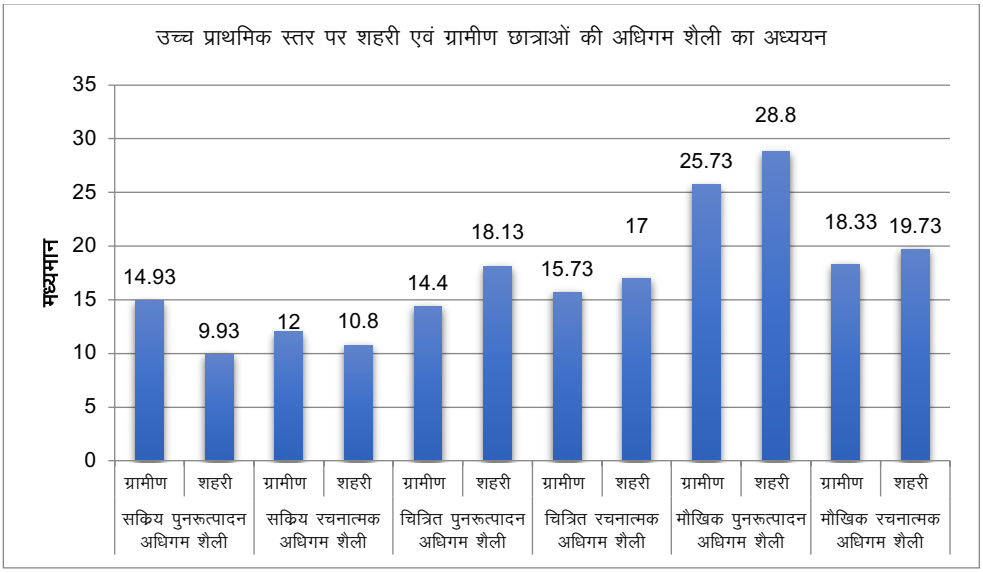


**व्याख्या :**

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 14.93 और 9.93 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्राओं की सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 3.62 है जो

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

.01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्राओं में सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 12.00 और 10.80 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्राओं की सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 0.99 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्राओं में सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 14.40 और 18.13 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्राओं की चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 2.07 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्राओं में चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 15.73 और 17.00 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्राओं की चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 1.11 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्राओं में चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 25.73 और 28.80 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्राओं की मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 1.75 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्राओं में मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 18.33 और 19.73 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्राओं की मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 1.05 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्राओं में मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि अधिगम शैली में ग्रामीण और शहरी छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 101.13 और 104.40 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्राओं अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 1.36 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण और शहरी छात्राओं में अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

अतः स्पष्ट है कि परिकल्पना ''शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की अधिगम शैली के घटकों में सार्थक अन्तर पाया गया।'' असत्य सिद्ध होती है।

सारणी संख्या 4

उच्च प्राथमिक स्तर पर शहरी छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का अध्ययन

| क्र. सं. | अधिगम शैली | शहरी | संख्या (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन | टी–मान | सार्थकता स्तर (0.05 एवं 0.01) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

| | | | | | (SD) | (t-value) | Significant/ Not Significant(S/NS) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली | छात्र | 15 | 11.00 | 3.40 | 1.00 | सार्थक नहीं है |
| | | छात्रा | 15 | 9.93 | 2.34 | | |
| 2. | सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली | छात्र | 15 | 15.80 | 3.40 | 3.96 | सार्थक है |
| | | छात्रा | 15 | 10.80 | 3.50 | | |
| 3. | चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली | छात्र | 15 | 13.20 | 5.01 | 2.70 | सार्थक है |
| | | छात्रा | 15 | 18.13 | 4.99 | | |
| 4. | चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली | छात्र | 15 | 17.33 | 4.71 | 0.23 | सार्थक नहीं है |
| | | छात्रा | 15 | 17.00 | 2.85 | | |
| 5. | मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली | छात्र | 15 | 27.00 | 3.02 | 1.10 | सार्थक नहीं है |
| | | छात्रा | 15 | 28.80 | 5.57 | | |
| 6. | मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली | छात्र | 15 | 17.86 | 2.97 | 1.61 | सार्थक नहीं है |
| | | छात्रा | 15 | 19.73 | 3.36 | | |
| | कुल अधिगम शैली | छात्र | 15 | 102.20 | 11.86 | 0.64 | सार्थक नहीं है |
| | | छात्रा | 15 | 104.40 | 5.99 | | |

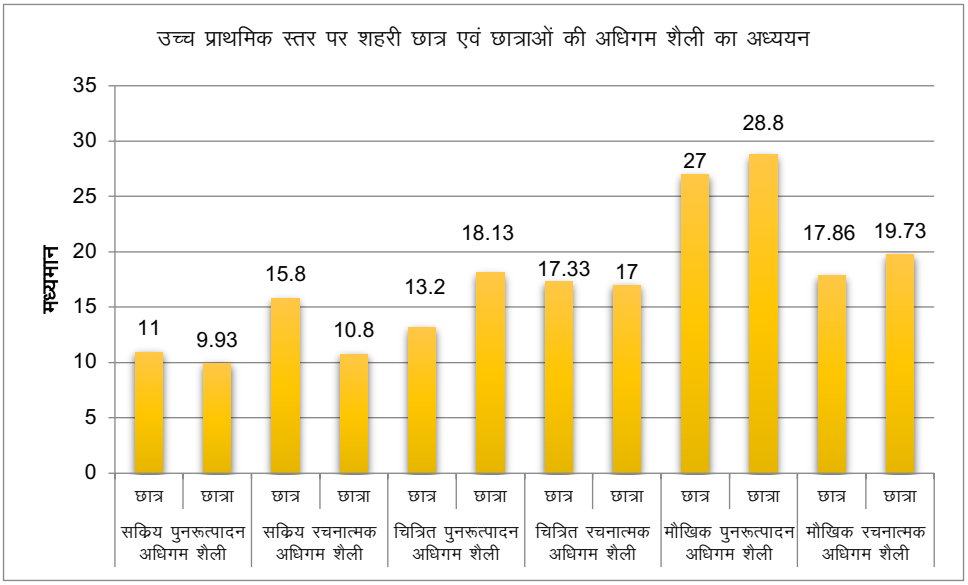


**व्याख्या :**

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली में शहरी छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 11.00 और 9.93 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली में नहीं अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 1.00 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि शहरी छात्र–छात्राओं में सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली में शहरी छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 15.80 और 10.80 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 3.6 है जो .01 के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि शहरी छात्र–छात्राओं में सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली में शहरी छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 13.20 और 18.13 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 2.07 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि शहरी छात्र–छात्राओं में चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली में शहरी छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 17.33 और 17.00 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 0.23 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि शहरी छात्र–छात्राओं में चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली में शहरी छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 27.00 और 28.80 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 1.10 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि शहरी छात्र–छात्राओं में मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली में शहरी छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 17.86 और 19.73 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 1.61 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि शहरी छात्र–छात्राओं में मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि अधिगम शैली में शहरी छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 102.20 और 104.40 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 0.64 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि शहरी छात्र–छात्राओं में अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

अतः स्पष्ट है कि परिकल्पना ''शहरी छात्र–छात्राओं की अधिगम शैली के घटकों में सार्थक अन्तर पाया गया।'' असत्य सिद्ध होती है।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

सारणी संख्या 5

उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की अधिगम शैली का अध्ययन

| क्र. सं. | अधिगम शैली | ग्रामीण | संख्या (N) | मध्यमान (M) | मानक विचलन (SD) | टी–मान (t-value) | सार्थकता स्तर (0.05 एवं 0.01) Significant/ Not Significant(S/NS) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली | छात्र | 15 | 15.40 | 7.47 | 0.20 | सार्थक नहीं है |
| | | छात्रा | 15 | 14.93 | 4.80 | | |
| 2. | सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली | छात्र | 15 | 8.46 | 2.77 | 3.31 | सार्थक है |
| | | छात्रा | 15 | 12.00 | 3.07 | | |
| 3. | चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली | छात्र | 15 | 9.86 | 3.83 | 2.84 | सार्थक है |
| | | छात्रा | 15 | 14.40 | 4.85 | | |
| 4. | चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली | छात्र | 15 | 18.60 | 7.04 | 1.42 | सार्थक नहीं है |
| | | छात्रा | 15 | 15.73 | 3.36 | | |
| 5. | मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली | छात्र | 15 | 18.66 | 6.25 | 3.72 | सार्थक है |
| | | छात्रा | 15 | 25.73 | 3.86 | | |
| 6. | मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली | छात्र | 15 | 19.46 | 4.61 | 0.72 | सार्थक नहीं है |
| | | छात्रा | 15 | 18.33 | 3.86 | | |
| | कुल अधिगम शैली | छात्र | 15 | 90.46 | 8.60 | 3.70 | सार्थक है |
| | | छात्रा | 15 | 101.13 | 7.11 | | |

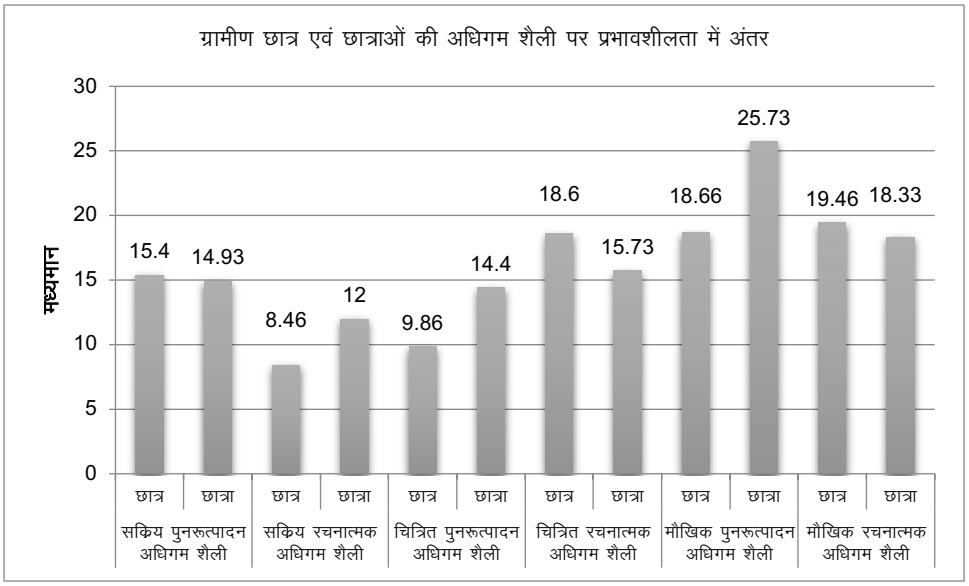


**व्याख्या :**

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली में ग्रामीण छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 15.40 और 14.93 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

मान 0.20 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र–छात्राओं में सक्रिय पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली में ग्रामीण छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 8.46 और 12.00 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 3.31 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र–छात्राओं में सक्रिय रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली में ग्रामीण छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 9.86 और 14.40 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 2.84 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र–छात्राओं में चित्रित पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली में ग्रामीण छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 18.60 और 15.73 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर नहीं है। इससे प्राप्त टी का मान 1.42 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र–छात्राओं में चित्रित रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली में ग्रामीण छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 18.66 और 25.73 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 3.72 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र–छात्राओं में मौखिक पुनरूत्पादन अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली में ग्रामीण छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 19.46 और 18.33 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली में अंतर नहीं होता है। इससे प्राप्त टी का मान 0.72 है जो .01 स्तर के मानक मान से कम है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र–छात्राओं में मौखिक रचनात्मक अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

उपरोक्त सारणी से ज्ञात होता है कि अधिगम शैली में ग्रामीण छात्र–छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 90.46 और 101.13 पाया गया है। इससे पता चलता है कि दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं अधिगम शैली में अंतर है। इससे प्राप्त टी का मान 3.70 है जो .01 स्तर के मानक मान से अधिक है अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र–छात्राओं में अधिगम शैली के मध्य सार्थक अंतर पाया जाता है।

अतः स्पष्ट है कि परिकल्पना ''ग्रामीण छात्र–छात्राओं की अधिगम शैली के घटकों में सार्थक अन्तर पाया गया।'' सत्य सिद्ध होती है।

## निष्कर्ष :

परिकल्पना 'शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली का स्तर लगभग समान है।' सत्य सिद्ध होती है। सभी उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का स्तर उच्च पाया गया है जबकि अधिगम शैली के प्रकारों में विभिन्नता पायी गई है।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

परिकल्पना ''शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की अधिगम शैली के घटकों में सार्थक अन्तर पाया गया।'' सत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना ''शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की अधिगम शैली के घटकों में सार्थक अन्तर पाया गया।'' सत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना ''शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं की अधिगम शैली के घटकों में सार्थक अन्तर पाया गया।'' असत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना ''शहरी छात्र–छात्राओं की अधिगम शैली के घटकों में सार्थक अन्तर पाया गया।'' असत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना ''ग्रामीण छात्र–छात्राओं की अधिगम शैली के घटकों में सार्थक अन्तर पाया गया।'' सत्य सिद्ध होती है।

## संदर्भ सूची :

1. Bhat, M. (2019) Learning Styles in the Context of Reasoning and Problem-Solving Ability: An Approach based on Multivariate Analysis of Variance, International Journal of Psychology and Educational Studies, 6 (1), pp. 10–20.
2. Casakin, H. (2010) Learning styles and students' performance in design problem solving. Archnet-IJAR: International journal of Architecture Research.
3. Demirbas, O.O. & Demirkan, H. (2003) Focus on architectural design process through learning styles. Design studies, 24(5), pp.437-456.
4. Demirkan, H. & Demirbas, O.O. (2010) The effects of learning styles and gender on the academic performance of interior architecture students, Procedia-Social and Behavioral Sciences, 2(2), pp.1390-1394.
5. Eishani, K. A., Saad, E. A. & Nami, Y. (2014) The Relationship between Learning Styles and Creativity, Procedia - Social and Behavioral Sciences, 114, pp. 52–55
6. Garg, M. R. (2015) A Study of Styles of Learning and Thinking in Relation to Creativity of High School Level Students, Indian Journal of Research, 4 (11), pp. 127–128
7. Hawk, S. (2007) Using Learning Style Instruments to Enhance Student Learning. Decision Sciences Journal of Innovation Education, 5 (1), pp.1-19
8. Herwindo, R. P., Dwisusanto, Basuki Y. & Nirwan, E. H. (2023) Architectonic creativity in the dynamics of Indonesian Pre-colonial Architecture. ISVS e Journal, 10(1), 49-70
9. Hosseini, E. S., Falamaki, M. M.& Hojat, I. (2019). The Role of Creative Thinking and Learning Styles in the Education of Architectural Design, Journal of Architectural Thought, 3(5), pp. 125- 140.
10. Hsu, H. C. (1999) Learning styles of hospitality students: Nature or nurture? International Journal of Hospitality Management, 18(1), pp. 17-30.
11. Joyce, S. S., Chundeli, F. A. & Vijayalaxmi, J. (2022) The impact of Outdoor School Environments on Students' Overall Development: A Review of Current Knowledge. ISVS e- Journal, 9(5), 155- 167
12. O'Hara, L. A. & Sternberg, R. J. (2001) It Doesn't Hurt to Ask: Effects of Instructions to Be Creative, Practical, or Analytical on Essay-Writing Performance and Their Interaction with Students' Thinking Styles, Creativity Research Journal, 13 (2), pp. 197–210.
13. Onsman, A. (2016) Assessing creativity in a new generation architecture degree. Thinking skills and creativity, Vol. 19, pp. 210-218.
14. Pasha, S. (2008) The relationship between creativity and personality traits of high school students in Tehran, Journal of Educational Innovation, pp. 11-32.
15. Saadet, E. & Sadeghi, M. (2005). Model to explain the design and creativity in preparing the groundwork for the country's research institutes, Journal of Daneshvar Behavior, 14, pp. 35-46

16. Suh, J. & Cho, J. Y. (2018) Analyzing Individual Differences in Creative Performance: A Case Study on the Combinational Ideation Method in the Interior Design Process, Journal of Interior Design, 43 (3), pp. 9–23.
17. Willcoxson, L. and Prosser, M. (1996) Kolb's Learning Style Inventory (1985): review and further study of validity and reliability, British Journal of Educational Psychology, 66 (2), pp. 247–257.
18. Yazici, K. (2017) The Relationship between Learning Style, Test Anxiety and Academic Achievement, Universal Journal of Educational Research, 5 (1), pp. 61–71